ओं

विनायकदुर्गागंगोत्पत्तिः

सत्यं शिवं सुन्दरम्



रचयिता :-

जगन्नाथ रिवू शास्त्री

भट्टयार, आलीकदल, श्रीनगर (२)

काश्मीर

ओ३म्

स्वस्ति सिद्धम्

स्वयं प्रकाशमान ज्योति स्वरूप, शान्ति देने वाले ओं नाम से वाचक, परमात्मा स्वयं सिद्ध है।

केवल इसकी निष्ठा और विश्वास पा लेना ही मानव का प्रयत्न होना चाहिए :

"तस्य वाचकः प्रणवः"

इस प्रकार भगवान् पतञ्जलि ने अपने योगसूत्र के द्वारा परमात्मा का नाम निर्वचन किया है। उस परमात्मा का नाम ओं है।

इस ध्वनि को योगी पुरुष २४ घण्टों में २१६०० प्राणापान गति से नादानुसन्धान में लगे रहते हैं। यही ध्वनि हृदयाकाश से उठकर शंख-ध्वनि के समान उनके कानों में गूंजता रहता है।

इस प्रकार सूक्ष्म रूप का ध्यान अपने अन्दर समा कर वे योगैश्चर्य तथा अणिमा आदि आठ सिद्धियां प्राप्त कर लेते हैं।

कुछ कर्मठ कर्मकाण्डी लोग सूक्ष्म रूप से उसकी उपासना न करके स्थूल रूप से ध्यान धारण करके अपने अभीष्ट कार्यों को प्राप्त करते हैं। स्थूल ध्यान इस प्रकार वे धारण करते हैं :-

बिभ्रत् दक्षिणहस्तपद्मयुगले दत्ताक्षसूत्रे शुभे
वामे मोहकपूर्णपात्रपरशु नागोपत्रोती त्रिदृक्

श्रीमान् सिंह युगासनः श्रुति युगे शंखौ वहन् मौलिमान्
दिश्यादीश्वरपुत्र एष भगवान् लम्बोदरशशर्मनः ॥

इस पद्य का साधारण अर्थ इस प्रकार है :–

जिसके उदर में संपूर्ण ब्रह्माण्ड समाया हुआ है जो छः ऐश्वर्य संपन्न है। जिसने दाहिने दोनों हाथों पर दांत और माला तथा बाएं दोनों हाथों पर लड्डुओं से भरा हुआ पात्र और फरसा धारण किया हुआ है।

जिसने सांप को यज्ञोपवीत के बदले धारण किया है। वही त्रिनेत्रधारी दो शेरों के आसन पर विराजमान, दाये और बायें शंख के समान दोनों कानों से नादानुसन्धान करने वाले, यह पुरो दृश्यमान ईश्वर का प्रिय पुत्र लम्बोदर जी हम सबों का कल्याणमार्ग प्रशस्त बनावें।

इसी श्लोक के आधार पर कवि ने अधस्तन छः पद्यों को रचना की हुई है।

विनायक वल्लभा षट्पदी

हमारे धर्माचार्यों ने विनायक जी को प्रत्येक धर्मकार्य में प्रथम स्थान दिया हुआ है, इसको अनेक नामों से विभूषित भी किया है; जैसे—हेरम्ब, एकदन्त, गणेश आदि भाद्रपद शुक्ला चतुर्थी का दिन इनके उपलक्ष्य में हिन्दू जनता बड़े समारोह से मनाती आई है सारे हिन्दू नरनारी इस दिन बड़ी श्रद्धा और भक्तिभाव से विनायक जी की पूजा करके अपने इष्टजनों को नेवैद्य (प्रसाद) बांटते आए हैं

अब प्रश्न यह है कि यह विनायक कौन हैं ? इनका आकार-प्रकार क्या है ? इनका क्रिया-कलाप क्या है ? उनका उपासना करने से मानव को क्या लाभ हैं ? शास्त्रकारों ने इनके बिषय में क्या अनुमति प्रदान की है ? इन सब प्रश्नों का विवेचम इन अधोनिर्दिष्ट पद्यों के पढ़ने से विदित होगा । स्थूल और सूक्ष्म भेद से विनायक जी के दो रूप माने जाते हैं । यद्यपि इन दोनों रूपों में कोई अन्तर नहीं दीख पड़ता तथापि अधिकारि भेद से दोनों भिन्न-भिन्न रूपों में विभक्त हो जाते हैं । मोटे तौर पर स्थूल रूप गजमुख चतुर्भुज छोटे से चूहे पर सवार त्रिनेत्र-धारी और 'एक दन्त' माना जाता है । परन्तु इनका सूक्ष्म रूप (ॐ) प्रणव से मिलता है ।

आजकल वैज्ञानिक युग में सभ्य - मानव - समाज इस अनोखे रूप को देख कर उपहास करता है, उनका विचार इस प्रकार है कि क्या कोई बृहत्काय देवता हाथी का मुख धारण करके चतुर्भुज होकर छोटे से चूहे पर चढ़ सकता

है ? हम इन मनघड़न्त असम्भव बातों पर विश्वास नहीं करते हैं। इस प्रकार कह कर वे औरों का भी विश्वास घटाते हैं।

अस्तु—निम्नलिखित पद्यों द्वारा उनको विश्वास करना पड़ेगा कि यह स्थूल रूप विनायक जी का वास्तविक सूक्ष्म रूप ही है। परन्तु अधिकारि भेद से वह भिन्न प्रतीत होता है।

यही ओंकार रूप विनायक पट में ताना-बाना की तरह सारे विश्व में ओत प्रोत है। इनके बिना सारा विश्व तुच्छ निसार थोथा-सा प्रतीत होता है। यह विषय अत्यन्त गूढ़ और इन्द्रियातीत है। इसका निरूपण करना एक छोटी सी नैया पर चढ़ कर महासागर को पार करने के समान है। तथापि सद्गुरुओं की कृपा का सहारा लेकर मैं इस विषय पर थोड़ा बहुत प्रकाश डालना चाहता हूं। मैंने इन पद्यों को २००६ विक्रमी भाद्रपद शुक्ला चतुर्थी रवि के दिन निर्माण किया था। इन पद्यों को प्रकाशित करने के लिए मुझे आज तक अवसर न मिल सका। आज मैं इन पद्यों को अनुवाद करके भक्त-जनों की भक्ति बढ़ाने के लिए इस पुस्तक में प्रकाशित करता हूं। भक्त-हृदय महानुभाव इन पद्यों को पढ़ कर तथा उनका मनन करके मेरे परिश्रम को सफल बनाएं।

[१] विश्वं व्याप्य स्थितो यः सुरवरगुरुणाभ्यर्चितो ब्रह्मणाद्ये
सृष्टेः सस्थापनार्थं 'विविधमुनिवरैः' पूजितो योगसिद्धयै।'
दाता सर्वाः समृद्धीः हरिहरनमितः पार्वतीप्राणभूतो
हेरम्बः पातु सोऽस्मान् द्विपवर वदनः सिंहयुग्माधिरूढ़ः ॥ १॥

"रवि शब्दे" धातु से नुम करके "रम्ब" शब्द की व्युत्पति होती है। हे सम्बोधन का चिन्ह लगा कर 'हे रम्ब" शब्द बन जाता है। अतः इसका अर्थ यह हुआ कि हे शब्दब्रह्ममय वेद को उच्चारण करने वाले प्रणवरूप विनायक !!!

"तस्य वाचको प्रणवः" इस महाभाष्य-कार श्री पतञ्जलि भगवान के सूत्र के अनुसार प्रणव ही शब्द-ब्रह्ममय-परमात्मा का उच्चारण करने वाला है।

प्रणव ही विनायक के रूप में परिणत हुआ है। विनायक ही हमारा श्रेष्टनायक है, "विशिष्टो नायकः" अर्थात श्रेष्ट नेता। "स्वं स्वं कार्यं प्रति लोकान् नयति विनायकः" जो लोगों को अपने - अपने काम पर ले जाएं। नायक (नेता, के बिना कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं होता है। अत सिद्ध हुआ कि विनायक जी ही हमारे विघ्न-बाधाओं को हटा कर हमारा कार्य सिद्ध करते हैं। सूक्ष्म रूप से हमारे अन्तःकरण में स्थित (ॐ) प्रणव नाम से हेरम्ब ही श्वास - उश्वास द्वारा प्राणापान में ओत-प्रोत होकर प्रणव स्वर ओं का उच्चारण करता है।

वही हेरम्ब समूचे विश्व में व्यापक रूप से स्थित है। सृष्टि के समारम्भ पर सृष्टि - रचयिता ब्रह्मा जी ने अपनी सफलता के लिए इसी हेरम्ब जी की पूजा अर्चा की थी।

नानाविधमुनविर अपनी योगसिद्धि प्राप्त करने के लिए इसी हेरम्ब का पूजन करते आए हैं ।

यही हेरम्ब जो सब प्रकार सुख-सम्पदा के देने वाले हैं ।

श्रीहरि और शिवजी सदा इसी हेरम्ब की वन्दना करते रहते हैं ।

यही हेरम्ब अपरा प्रकृति महामाया पार्वती जी का प्राण है । अर्थात् प्रकृति इसके बिना निराधार है ।

इसी हेरम्ब जी ने पूर्णाहन्ता स्वरूप मद से मस्त हाथी का-सा सूंड (उ) धारण किया है ।

यही हेरम्ब जी सगुण और निर्गुण, स्थूल और सूक्ष्म रूपों में विभक्त प्राणापान दो सिंहों के आसन पर विराजमान है । यही हेरम्ब जी हम सबों की रक्षा करें ।

(२) यो विश्वात्मा प्रणववपुषालंकरोतीहशुण्डं
पूर्णाहन्तां वहति स बहिर्वारणेन्द्रस्य रूपात् ।
कूटाहन्तां नयति विलयं मूषकस्याधिरूढ़ो
विश्वामोदं वहति च करे मोदकै. पूर्णपात्रम् ॥२॥

यही हेरम्ब जी सारे विश्व की आत्मा है । इसी हेरम्ब जी ने प्रणव (ओं) रूप धारण करके हाथी का-सा (ओं) सूंड सुशोभित किया है ।

शास्त्रकारों ने अहंकार के दो भेद माने हुए हैं । प्रथम पूर्णाहन्ता जो उत्तम प्रकृति व्यक्तियों में पाई जाती है । जिससे सारे विश्व पर अधिकार प्राप्त होता है ।

दूसरी कूटाहन्ता तुच्छ (अधम) प्रकृति के व्यक्तियों में पाई जाती है जोकि सीमित है ।

इसी निःसीम पूर्णाहन्ता को हेरम्ब बाहर गजेन्द्र का - सा मुख बना कर धारण करते हैं ।

दूसरी कूटाहन्ता जोकि सीमित और तुच्छ है चूहे पर सवार होने से पैरों तले दबाते हैं।

अपने 'कर कमल' पर रखे हुए लड्डुओं का पूर्णपात्र ही मानो सम्पूर्ण विश्व का आनन्द आप धारण करते हैं ।

श्री कृष्ण भगवान् यही पूर्ण अहन्ता का भाव श्री गीता जी की दसवीं अध्याय में श्री अर्जुन देव को उपदेश देते हुए प्रकट करते हैं :

" अहमात्मा गुडाकेश सर्वभूताशय स्थित " इसी भाव को ले कर श्रुति भी हमें सूचित करती है"—'अयमात्मा ब्रह्म' इति ॥

(३) विघ्नान् हर्तुं वहति सुकरे सूक्ष्मविद्याकुठार
मात्मस्थं तं स्मरति पुरुषं चाक्षमाला निवेशात।
हस्ते दन्तं भजति विमलं लेखनी ग्रन्थनाय
सो नः पायाच्छिवपदरतः सृष्टिबीजो गणेशः ॥३॥

यही हेरम्ब, वसु, रुद्र और आदित्यादि सब प्रकार के गणों का अधिनायक है। यही सूक्ष्म विद्यारूपी फरसा अपने करकमल में लेकर अज्ञान रूपी विघ्नों का हरण करते हैं। २१६०० प्राणापान गति ही मानो रुद्राक्षमाला धारण करने से आत्मस्थित पुराण पुरुष के स्मरण करने की शिक्षा देते हैं।

लेखनी का बहाना बना कर कर-कमल में दान्त धारण करने से श्रुति स्मृति ज्ञान बांटने का उपदेश देते हैं।

वही कल्याणमार्ग का अग्रदूत, सृष्टि का बीज भूत, गणनायक हमारी रक्षा करे।

हेरम्ब जी की (धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष ही) चार भुजाए चार साधनों से सुसज्जित समझनी चाहिए।

(४) रागद्वेषं हरति सहसा यज्ञसूत्रद्विजिह्वै
र्भालं बाल श्रयति चविधुं, मानस. निर्मलत्वम्।
भ्रूमध्ये यल्लसति नयन ज्ञानविज्ञानबीजं
सो नः पायाच्छशिशलधृक् पार्वतीशानसूनुः ॥४॥

दो जिह्वाओं को धारण करने वाले सांप को यज्ञसूत्र के रूप में पहनने से रागद्वेष त्यागने की सूचना मिलती है।

तेज के भण्डार चन्द्रकला को माथे (ˇ) पर धारण

करने से अज्ञान रूपी अन्धकार दूर करने को सूचना मिलती है तथा मन की निर्मलता सूचित करता है।

ज्ञान और विज्ञान का बीजभूत (ं) बिन्दु भ्रूमध्य में तृतीय नयन मानो ज्ञान चक्षु ही सुशोभित हो रहा है।

चन्द्रकला मस्तकधारी अपरा प्रकृतिरूपापार्वती जी का प्राणप्रिय पुत्र हेरम्ब जी हमारी पालना करें।

(५) य पूजादौ श्रयति विभवं पूजकः पूजयित्वा
योगज्ञा यं हृदयकमले ध्यानगम्यं स्मरन्ति।
वामेभागे वहति सततं वल्लभां यः स्वकीयां
भूयो भूयःसकल जगतां तं स्वनाथं स्मरामि ॥५॥

,पूजा करने वाला पूजा के आरम्भ काल में जिस विनायक जी की पूजा करके वैभव और ऐश्वर्य प्राप्त करता है

योग साधना में निरत योगीजन जिस हेरम्ब जी को स्वहृदय कमल पर ध्यान धारणा से जान कर योगसिद्धि प्राप्त करते हैं। जिस हेरम्ब जी ने वामभाग में प्रिय अणिमा लघिमा आदि अष्टसिद्धियों की सुन्दर कलाए धारण की हैं।

उसी हेरम्ब जी को "जो सम्पूर्ण जगत् का नाथ है" बार-बार प्रणाम करता हूं और स्मरण करता हूं

(६) स्मारं स्मारं प्रणववपुष चैकदन्तं शरण्यं
ध्यायं ध्यायं प्रकटसवितु र्व्योम्नि देवस्य भर्गः।
यन्नो ध्येयं गुरुवरमुखाच्चोदनाद्वै बरेण्यं
तत्सद् ध्याये हृदयकमले बोधरूपं स्वरूपम् ॥६॥

पूर्वोक्त पांच पद्यों में प्रणव का स्वरूप हेरम्ब से अभिन्न सिद्ध हुआ । अर्थात् प्रणव ही हेरम्ब है और हेरम्ब ही प्रणव या विनायक जी हैं, इसमें कोई अन्तर नहीं है ।

अब इस पद्य में महागायत्री मन्त्र द्वारा हेरम्ब जी की ओंकार से अभिन्नता दिखाई जाती है । शरणागत-वत्सल तथा एकदन्त प्रणव स्वरूप हेरम्ब जी को मैं बार-बार स्मरण करता हूं ।

आकाश (हृदयाकाश) में सदा विचरने वाले सविता नाम से विभूषित उस प्रणव रूप भर्गाख्य प्रकाश विमर्शमय तेज को पुनः - पुनः ध्यान करता हूं ।

जो गुरुवर मुखारबिन्द की चोदना से ध्यानगम्य और वरणीय है ।

ज्ञान बुद्धि को देने वाले उसी सत्य स्वरूप विनायक जी को मैं स्वहृदय कमल में ध्यान करता हूं ।

इस पद्य में गायत्री मंत्र निहित है। इससे प्रणव (ॐ) और हेरम्ब की अभिन्नता प्रतीत होती है । अतः गायत्री मन्त्र ही हमे विनायक जी की उपासना करने का आदेश देता है । जो कि प्रत्येक उपासक के लिए अभीष्ट फल देने वाला है ।

(७) सुरभिमधुरां झंकारैर्यः सदा सुमनः प्रियां
सुभग पुरुषो गायन् रागै-र्मधोरिव षट्पदीम् ।
मधुप इव वै कृष्णां मूर्ति दधत् कमला श्रियां
हृदय कमले देवं ध्यात्वा समाश्रयतिश्रियम् ।।७।।

पूर्वोक्त षट्पदी (छः पदों की स्तुति) मानो वसन्त कालीन भ्रमरी है। जिस को सुमन (पुष्प) सदा प्रिय लगते हैं तथा जो पुष्पपराग का स्वाद कर के मधुर झंकार करती है। ठीक उसी प्रकार यदि कोई सौभाग्यशाली पुरुष इस षट्पदी को देवताओं को सदा प्रिय लगने वाली ज्ञान सुरभि से 'माधुर्यपूर्ण' भ्रमर झंकार की तरह अनुराग से गाता रहे। वह पुरुष "कमल पर काली मूर्ति धारण किये हुए भ्रमर की भांति, सुषमा को प्राप्त करने वाली श्री कृष्ण जी की मूर्ति को हृदय कमल पर धारण करके" शोभा और लक्ष्मी को प्राप्त करता है।

इस पद्य में शब्दश्लेष, रूपकातिशयोक्ति, उपमा और उत्प्रेक्षा अलंकार है और प्रणव रूप श्री कृष्ण जी का सामीप्य प्राप्त हो जाता है।

प्रथम श्लोक टिप्पणी

"रभि शब्दे" इति धातो नुम् विधाय रम्भ इति निष्पत्ति।
हे सबोधने कृते हे रम्भ इति सिद्धम्। तदर्थश्च हे शब्दब्रह्ममय।

प्रणवरूप—प्रणव एव ओं रूपेण स्थितः तस्य वाचकः प्रणवः इतिवचनात् प्राणापानसज्ञौ द्वौ सिंहौ। ययो र्निग्रहः सिंह निग्रहतुल्यः॥

(८) जगन्नाथकृता सैषा विनायकयुगे रवौ।
बिक्रमे नवखबिंशे शुक्ले सिंहे गते रवौ॥ ८
भाद्रपद शुक्ला चतुर्थी रविवार के विक्रमी २००९ दिन
उपरोक्त पद्यों की रचना की गई है॥ ८ ॥

प्रकाश पत्रिका नवम्बर १९६३ ई०

★ समाप्त

ॐ अथ नवदुर्गा स्त्रोत्रम्

१. सच्चित्कला भगवती प्रथमं सुसूक्ष्मा विद्योतते सुकृतिनां हृदये पराख्या ।
भर्गाख्यया सवितृमण्डलमध्यसस्था सा बुद्धिचोदनपरा भवतु वरेण्या ।।

२. ध्यायन्ति यां सहृदया हृदये प्रभाते गायन्ति यां सुकवयो ललितैर्वचोभिः ।
यां योगिनः सुहृदये परिशीलयन्ति तां मोक्षदां भगवतीं शरणं प्रपद्ये ।।

३. शैलात्मजा कमलभूषितहंसयाना दुर्गा च दुर्गतिहरा भवनौ सुतारा ।
नारायणेन सुकृतैः स्मृतनामधेया विघ्नान्निवारयतु द्वादशषड् भुजाढ्या ।।

४. हे वासुदेवसहजे! प्रतार्तिहर्त्रि ! हे नन्दगोपजयदे ! वसुदेवनीते ! ।
हे कंसराजदलिनि! श्रितव्योम मार्गे! देवैस्तुते! भगवति! वरदे नमोऽस्तु ।।

५. श्रीनीलकण्ठस्य हृतार्धकाया पद्मे सहस्रे धृतपद्मपादा ।
योगीन्द्रवर्यैर्विहितप्रणामा शैलात्मजा विन्ध्यनिवासिनी सा ।।

६. पूर्णेन्दुवक्त्रा शरदिन्दुशुभ्रा भोगेन्द्रहारा नवद्विभुजाढ्या ।
सिंहाधिरूढा सुविशालनेत्रा सा शैलपुत्री भवतु प्रसन्ना ।।

७. या षट् सरोजे च कृताधिवासा तारं जपन्ती प्रणवं प्रमोदात् ।
सार्धत्रिवृत्या च समुल्लसन्ती सा वेदमाता भवतु प्रसन्ना ।।

८. या चन्द्रभाला कमलासने स्वे विन्यस्य पादौ धृतकोणहस्ता ।
कुक्षौ दधाना च सुशुभ्रवीणा सा शारदा नो वरदा सदास्तु ।।

९. कुमारमाता द्विरदाननार्चिता शब्दात्मिका गद्यपदैरुदीरिता ।
उद्गीथबीजा प्रणवस्वरूपिणी सा पद्महस्ता भवतु प्रसन्ना ।।

१०. (1) गायत्री (2) मोक्षदा (3) दुर्गा, (4) वरदा (5) विन्ध्यवासिनी ।
(6) शैलजा (7) वेदमाता च, (8) शारदा (9) पद्मधारिणी ।।

११. नवद्वारमयेहर्म्ये, गीयतेऽहर्निशं बुधैः ।
हंसीवहंस सहगा, खेचरीखगगामिनी ।।

१२. मूलाधाराद्विधंरन्ध्रं, प्राप्य सहस्त्रदलेस्थिता ।
नवभिर्गीयते पद्यैर्नवदुर्गा भयापहा ।

॥ समाप्तम् ॥

विनीतः – जगत० रविः

ओं

(गंगावतार:)

रामसुकुञ्जगामिनी

१ स्मारं स्मारं जनिमृतिभयं जातनिर्वेदवृति
ध्यायं ध्यायं पशुपतिमुमाकान्तमन्तर्निषन्नम् ।
पायं पायं सपदि परमानन्दपीयूषधारां
भूयो भूयो निजगुरुपदाम्बोजयुग्मं नमामि ॥

२ गंगापूरप्रचलितजटास्रस्तभोगेन्द्रभीता
मालिङ्गन्तीमचलतनयां सस्मितवीक्षमान: ।
लीलापाङ्गै: प्रणतजनता नन्दयञ्चन्द्रमौलि
र्मोहध्वान्तं हरतु परमानन्दमूर्तिश्शिवो न: ॥

३ कमण्डलौ या कमलासनेन समानिता पूर्वमपूर्वतोया ।
त्रिविक्रमे विष्णुपदारबिन्द संपूज्य याता हरमौलिभागम् ॥

४ भगीरथ: सागरगान्स्वपितृनुद्धर्तु कामश्शिव सन्निधौ स: ।
आराधयामास सरिद्वरां तां हिमाद्रिदेशे पितृमुक्तिनत्यै ॥

५ संतुष्टचित्तस्य शिवस्यमौलेर्विनिर्गता पुण्यजला त्रिमार्गै: ।
मन्दाकिनी स्वर्गपथानुगामिनी भागीरथी भारतपावनी सदा ॥

६ पातालगा भोगवती यशस्विनी या सप्तधा सप्तसरोवरे स्थिता ।
संपूजिताभूदृषिभिस्तुसप्तभि: सापातु नो रामसुकुञ्जगामिनी ॥

७ कूर्मासनस्था मृगशावकाक्षी, चतुर्भुजा शोभितश्वेतवस्त्रा ।
धृताक्षमाला घटपद्ममुद्रा, दृष्टा मया रामसुकुञ्जगा सा ॥

८ भागीरथी पूतजला त्रितापहा, या भारतेभ्यो जयदायिनी सदा ।
संपूजिता भारतवासिभिर्मुदा, सा मेऽस्तु चान्ते शिवधाम दायिनी ।

९ सदा पूता गंगा वितरति मुहुर्दर्शनसुखं
हिमाद्रे: सञ्जाता भरतविपिने सिञ्चति तरून् ।
मयादृष्टा सैषा प्रवहति सदा खण्डितगति:
स्वदेशस्य स्नेहं प्रकटयति मुदा स्नेहपयसा ॥

१०. हिमाद्रेर्निर्गत्य प्रविशति बनं तर्पणपरा
जनःस्थाने लोकान्विविधबहुलाभं प्रकुरुते ।
त्रिवेणो तोर्थेऽस्मिन् हसति कुरुते नर्तनमपि
जलोर्मीणां नृत्यं सुखकरमहो सागरजले ॥

११. कृतः कुञ्जे वासः परमसुखदो रामकृपया
प्रवद्धोऽस्यां स्नेहः सुरसरिति मे रामदयया ।
इयं गंगा मातुः प्रकटयति रागं मयि सदा
चिताभस्म त्याज्यं सुरसरिति मेऽतो मृतिपरम् ।।

१२. विरिञ्चिपाण्यब्जविनिर्गता सा, पदब्जपूता गरुडासनस्य ।
अलंकृता मूर्ध्नि सदाशिवेन, पुण्या पताका सगरात्मजानाम् ।

१३. गंगा नदी पूतजला त्रिमार्गगा, मन्दाकिनी भौगवती च जाह्नवी ।
विरिञ्चिनारायणरुद्रपूजिता, स्वर्गापवर्गाभयदा सुधा स्रवा ॥

१४. सत्सङ्गलाभं शिवपादपूजां, माघेऽसिते धर्मतिथौ समाप्य ।
द्विजो जगन्नाथसुनामधन्यस्तृप्तिं परामाप सुकुञ्ज भृङ्गः ॥

१५. गंगा गीता च गायत्री, त्रिवर्गफलदायिनी ।
तनौ वाण्यां हृदि स्फीता, जगदानन्ददा भवेत् ।

१६. त्रिसप्तनन्दैकदिने च क्रिस्तोर्माघेऽसिते धर्मतिथौस्वपितॄन्
द्विजो 'जगन्नाथ' सुनामधन्यस्तृप्तिं च कत्वा गृहमाजगाम ।।

१७. धूम्रपानं परित्यज्य, बलभद्रप्रचोदितः ।
जीवन्मुक्तो जगन्नाथो, रामकुञ्जे बभूव ह ॥

१८ राधाकान्त, सुदर्शनात्मजजगन्नाथेन संपादितो
नानाछन्दमयः सुरागभरितो गगावतारस्तवः
सोऽयं सज्जनमानसेषु नितरां शर्मप्रदो मोक्षदः
भूयान्नो जयदः सदा शिवमयः कामप्रदो भारते ।'

(श्री शिवार्पणमस्तु)

समाप्तम्

ग्रन्थकर्ता के अन्य प्रकाशन

		मूल्य
१.	पारिजात मञ्जरी	५.००
२.	विनायकवल्लभा	०.५०
३.	नवदुर्गा	०.२५
४.	गंगावतरण	०.२५
५.	श्री रहीमजगन्नीतिशतकम्	२.२५
६.	शिवनिर्वाण शतकम्	२.२५

——

पुस्तकें मिलने का पता :-

जगन्नाथ रिवू शास्त्री

भट्टयार आलीकदल,

श्रीनगर—२

काश्मीर